मेले में नाटक

Copyright © UNICEF 2011

रूपायन द्वारा प्रकाशित

मीना की कहानियों व अन्य प्रिंट सामग्री और मीना फ़िल्मों के लिए कृपया सम्पर्क करें:

रूपायन
डी-240 (प्रथम तल)
सर्वोदय एनक्लेव
नई दिल्ली-110017
दूरभाष: 011–41829795, 011–41829696, 9971217291
ई मेल: roopayan1@gmail.com

मुद्रण:

मीना एक हँसमुख, छोटी बच्ची है। वह अपने माता–पिता, दादी,
भाई राजू और बहिन रानी के साथ रहती है।
प्यारा मिट्ठू तोता उसका सबसे अच्छा दोस्त है।
मीना आपके आसपास रहने वाली किसी भी छोटी बच्ची की तरह ही है
लेकिन कुछ मामलों में वह अलग है।

वह सबसे दोस्ती रखती है।
किसी से भी सवाल पूछने में घबराती नहीं है।
मीना ईमानदार है और दूसरों का ध्यान रखती है।
वह अपनी, अपने परिवार और दोस्तों की परेशानियों को
सुलझाने की कोशिश करती है।

इस कहानी में मीना के स्कूल में एक मेले का आयोजन हो रहा है। मेले में गाँव वाले बहिनजी और बच्चों की मदद से यह सीखते हैं कि जब वे कहीं बाहर खुले में हों और भूकंप आ जाए तो उन्हें अपने बचाव के लिए क्या करना चाहिए।

मीना और राजू बड़े खुश हैं कि उनके स्कूल में मेला लगने जा रहा है।

स्कूल में बहिनजी कहती हैं – पिछले साल की तरह इस बार भी स्कूल में मेला होगा। पिछली बार की तरह सब बच्चे स्टॉल लगाएंगे।

सभी बच्चे खुश होकर ताली बजाते हैं। उन्हें मेले में स्टॉल लगाना बहुत अच्छा लगता है।

बहिनजी कहती हैं – मैं चाहती हूँ कि सभी बच्चे मेले की तैयारी और इंतज़ाम में हिस्सा लें। अब बताओ कि कौन क्या करेगा?

सभी बच्चे आपस में बातचीत करते हैं कि कौन क्या स्टॉल लगाएगा।

दिल कहता है – हम खाने की चीज़ों का स्टॉल लगाएंगे।
कई बच्चे इस स्टॉल के लिए खाने का सामान लाने को तैयार हो जाते हैं।
दीपू कहता है – मैं हिसाब रखूँगा।

राजू कहता है – हम खेलों का भी एक स्टॉल लगाएंगे।

बच्चे आपस में बातचीत करते हैं कि खेलों के स्टॉल में कौन–कौन से खेल रखे जाएं।

दिल अचानक कहता है – बहिनजी, अगर मेले के दौरान भूकंप आ गया तो?

मीना – हाँ बहिनजी! पिछले साल पड़ोसी राज्य में भूकंप आया था। मेरे पिताजी ने बताया था कि वहाँ कई लोगों को बहुत चोटें आई थीं।

सुम्मी ने पूछा – बहिनजी, अगर भूकंप आ गया तो हम क्या करेंगे?

बहिनजी बोलीं – अगर हम सुरक्षा के सही कदम उठाएँगे तो हमें कुछ नहीं होगा। हम सुरक्षित रहेंगे।

रूबी ने पूछा – बहिनजी, ये सही कदम क्या हैं?

बहिनजी समझाती हैं कि अगर भूकंप आ जाए और हम बाहर किसी भीड़–भाड़ वाली जगह या सड़क पर हों तो हमें क्या करना चाहिए।

सभी बच्चे बैठकर बहिनजी की बातें ध्यान से सुनने लगते हैं।

बहिनजी बताती हैं – अगर हम किसी भीड़–भाड़ वाली जगह या सड़क पर हों और भूकंप आ जाए तो हमें ज़मीन का हिलना बंद होने तक वहीं खड़े रहना चाहिए।

एक बच्चे ने पूछा – बहिनजी, क्या हम कहीं भी खड़े हो सकते हैं?

बहिनजी कहती हैं – नहीं बच्चों। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम पेड़ों, बिजली के तारों व खंभों और चलती गाड़ियों के पास खड़े न हों।

राजू पूछता है – बहिनजी, मेले में तो बहुत सारे लोग आएंगे। अगर भूकंप आ गया तो लोगों को बचाव के लिए क्या करना चाहिए?

बहिनजी ने कहा – हाँ, बहुत लोग आएंगे। हमेशा याद रखो, भूकंप के दौरान हमें शांत रहना चाहिए। हमें भागना नहीं चाहिए और ना ही एक–दूसरे को धक्का देना चाहिए।

मीना बोली – हाँ, हाँ। अगर हम घबराएंगे तो अफ़रा–तफ़री में कई लोगों को चोट भी लग सकती है।

दिल ने पूछा – बहिनजी, पर क्या मेले में आए सभी लोगों को मालूम होगा कि उन्हें क्या करना चाहिए?

बहिनजी ने जवाब दिया – ज़रूरी नहीं कि सबको मालूम हो कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

बहिनजी ने बच्चों के उत्साह को देखकर सुझाव दिया – बच्चों, तुम सब मेले में एक नाटक कर सकते हो। इस नाटक के द्वारा लोगों को बता सकते हो कि भूकंप आने पर क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

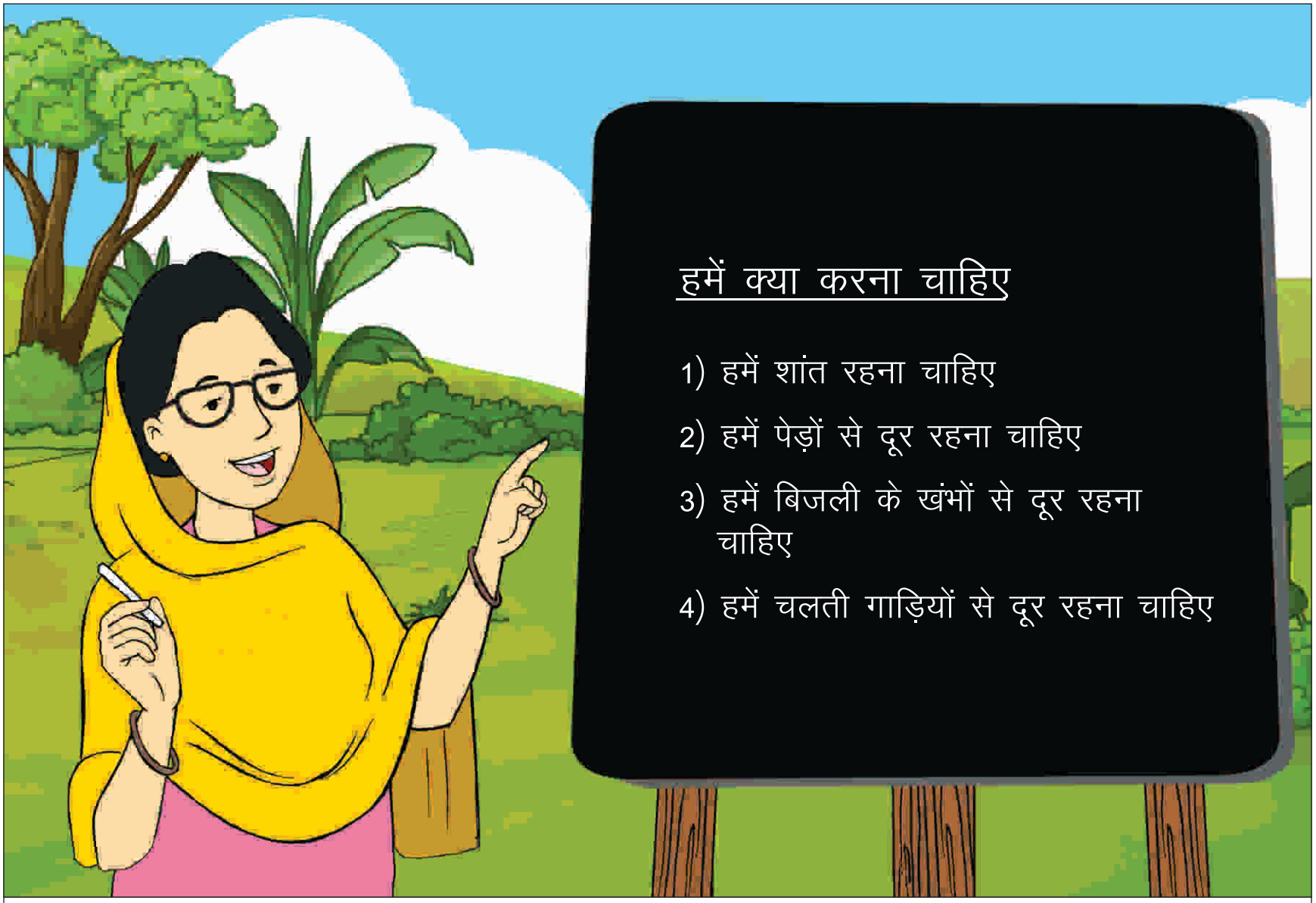

बहिनजी ने बताया कि भूकंप आने पर हमें क्या करना चाहिए।

सब बच्चे इस पर चर्चा करते हैं।

बहिनजी ने आगे बताया कि भूकंप आने पर हमें क्या नहीं करना चाहिए।
सब बच्चे इस पर चर्चा करते हैं।

मीना और रूबी ने कहा – हम नाटक तैयार करेंगे ताकि सब लोग जान सकें कि भूकंप के समय क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

बच्चे बहिनजी की मदद से नाटक की तैयारी शुरू कर देते हैं।

वे रोज़ आधी छुट्टी में नाटक का अभ्यास करते हैं।

अभ्यास के समय बहिनजी ने सुझाव दिया – क्या करना चाहिए, उसके लिए ✓ के निशान का इस्तेमाल करेंगे ।

मीना ने कहा – और जो नहीं करना चाहिए, उसके लिए X के निशान का।

मेले का दिन आया। नाटक शुरू होने वाला है।

मीना घोषणा करती है – आइए, आइए। हमारा नाटक देखिए। हम आप को दिखाएंगे कि जब आप कहीं बाहर किसी भीड़–भाड़ वाली जगह पर हों और भूकंप आ जाए तो क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

सब बच्चे और बड़े नाटक देखने के लिए इकट्ठे होने लगते हैं। देखते ही देखते लोगों की भीड़ लग जाती है। गाँव के मुखियाजी भी बड़े उत्सुक हैं कि देखें बच्चे क्या करते हैं।

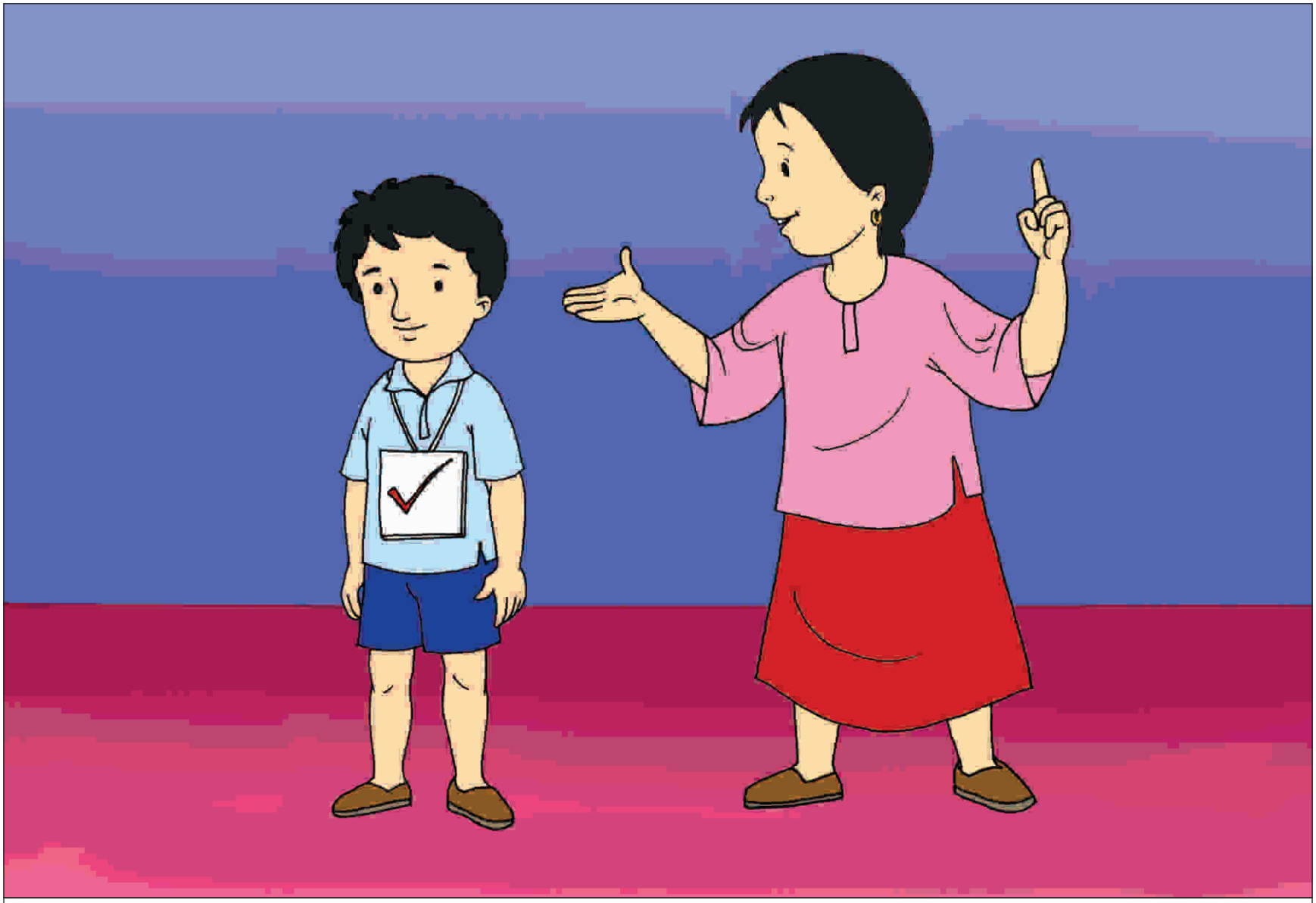

नाटक शुरू होता है।

मीना स्टेज पर आती है और कहती है कि भूकंप आने पर ज़मीन हिलने लगती है। ज़मीन का हिलना बंद होने तक हम जहाँ हों, हमें वहीं खड़े रहना चाहिए।

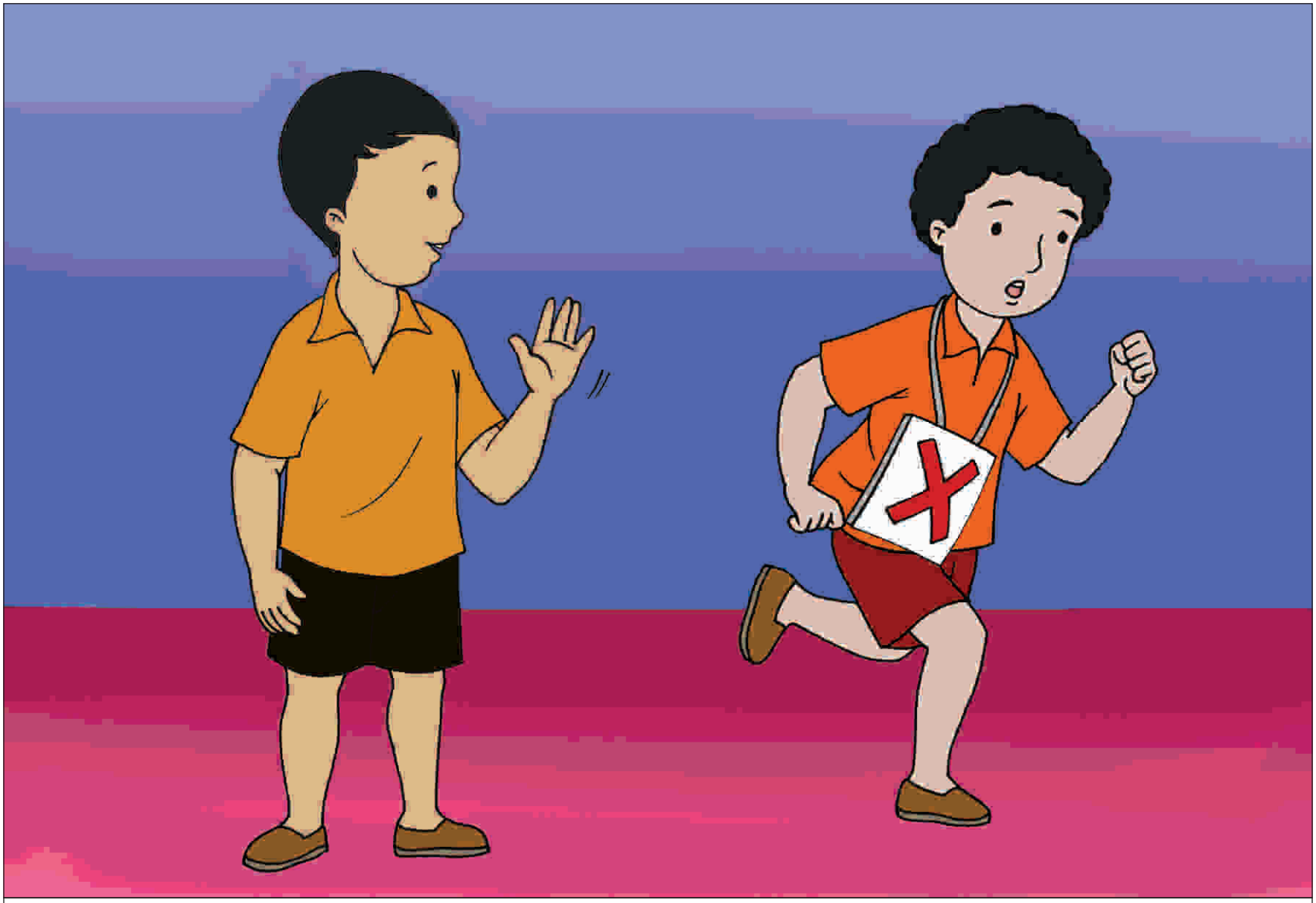

दिल बताता है कि भूकंप आने पर हमें क्या नहीं करना चाहिए।

1) हमें भागना नहीं चाहिए

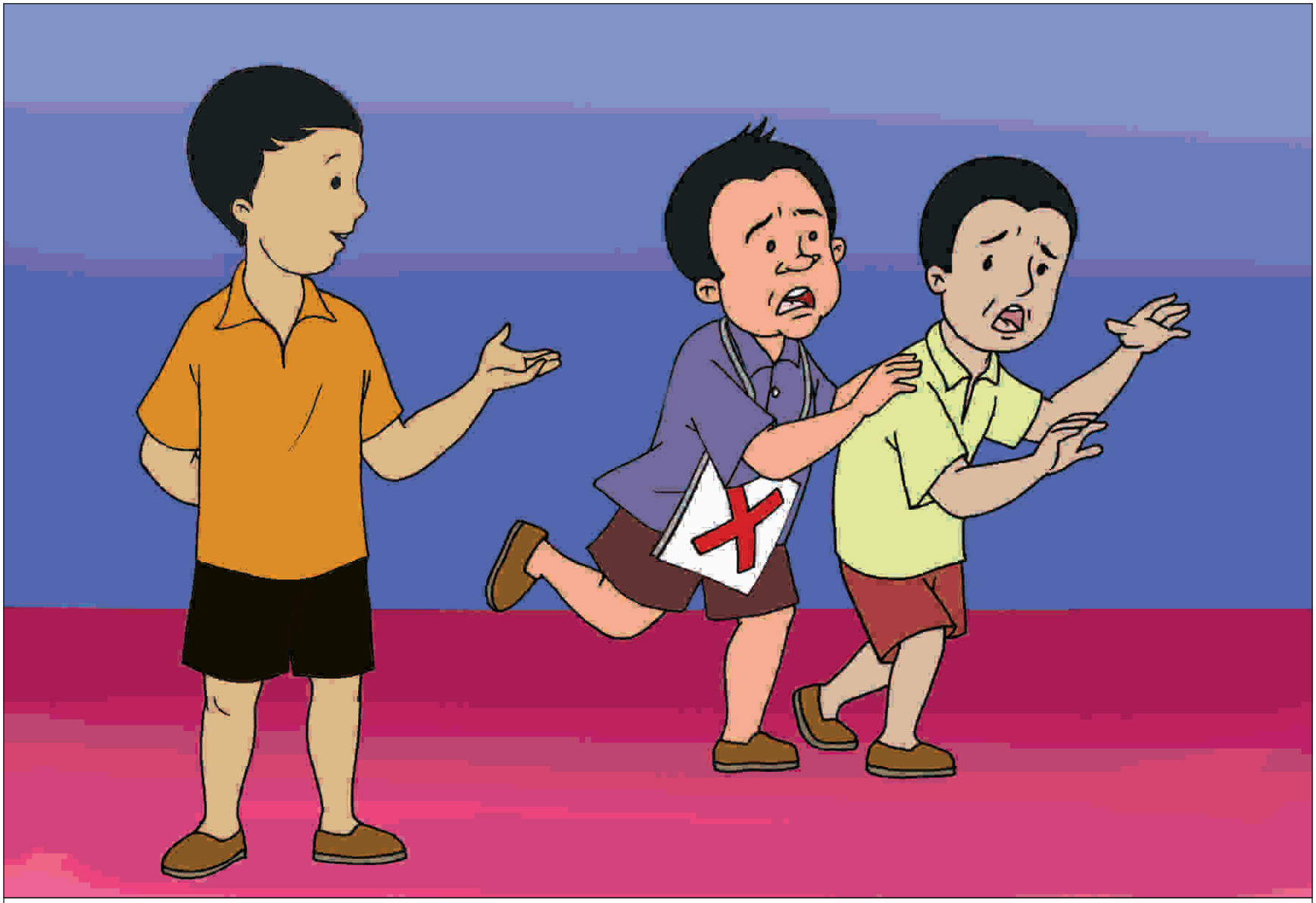

2) हमें एक–दूसरे को धक्का नहीं देना चाहिए

3) हमें घबराना नहीं चाहिए

रूबी ने दर्शकों को बताया कि भूकंप आने पर हमें क्या करना चाहिए

1) हमें पेड़ों से दूर रहना चाहिए

2) हमें बिजली के खंभों से दूर रहना चाहिए

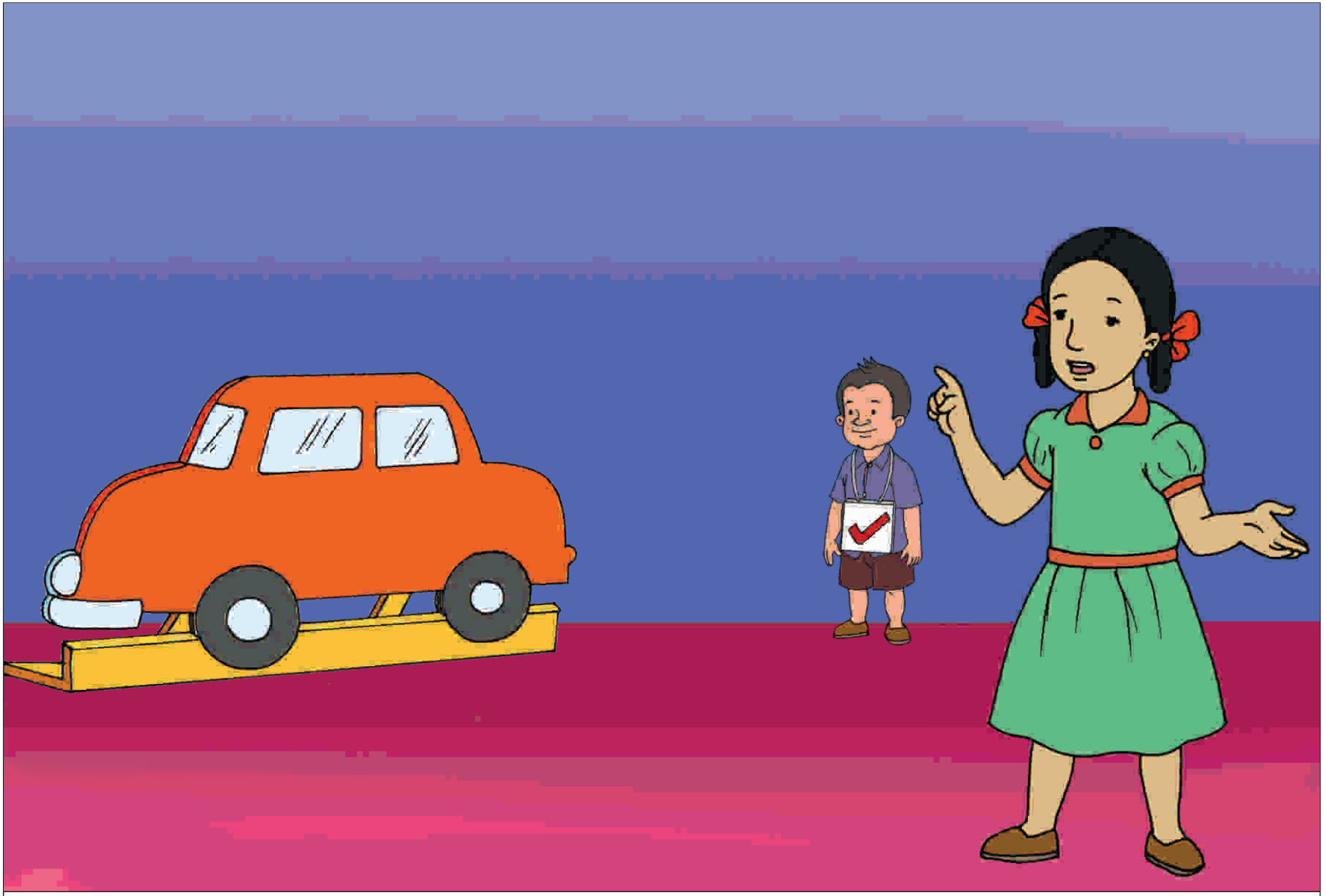

3) हमें चलती गाड़ियों से दूर रहना चाहिए

सब लोग नाटक को ध्यान से देख रहे थे।
सब को नाटक बहुत पसंद आता है।
नाटक समाप्त होते ही सभी लोग ज़ोर–ज़ोर से तालियाँ बजाते हैं।

बहिनजी नाटक के ज़रिए, सभी लोगों तक महत्वपूर्ण सूचना पहुँचाने के लिए, बच्चों को शाबाशी देती हैं। फिर वह मुखियाजी से बच्चों को ईनाम देने और कुछ कहने के लिए प्रार्थना करती हैं।

मुखियाजी बच्चों को शाबाशी देते हैं। वह कहते हैं – आज तुमने हम सबको बताया कि भूकंप के समय क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। हम इन उपायों की जानकारी देने के लिए गाँव में भी ऐसा ही नाटक करवाएंगे।

सभी बच्चे खुश होकर कहते हैं – हाँ, हाँ। हम ये नाटक दिखाएंगे।

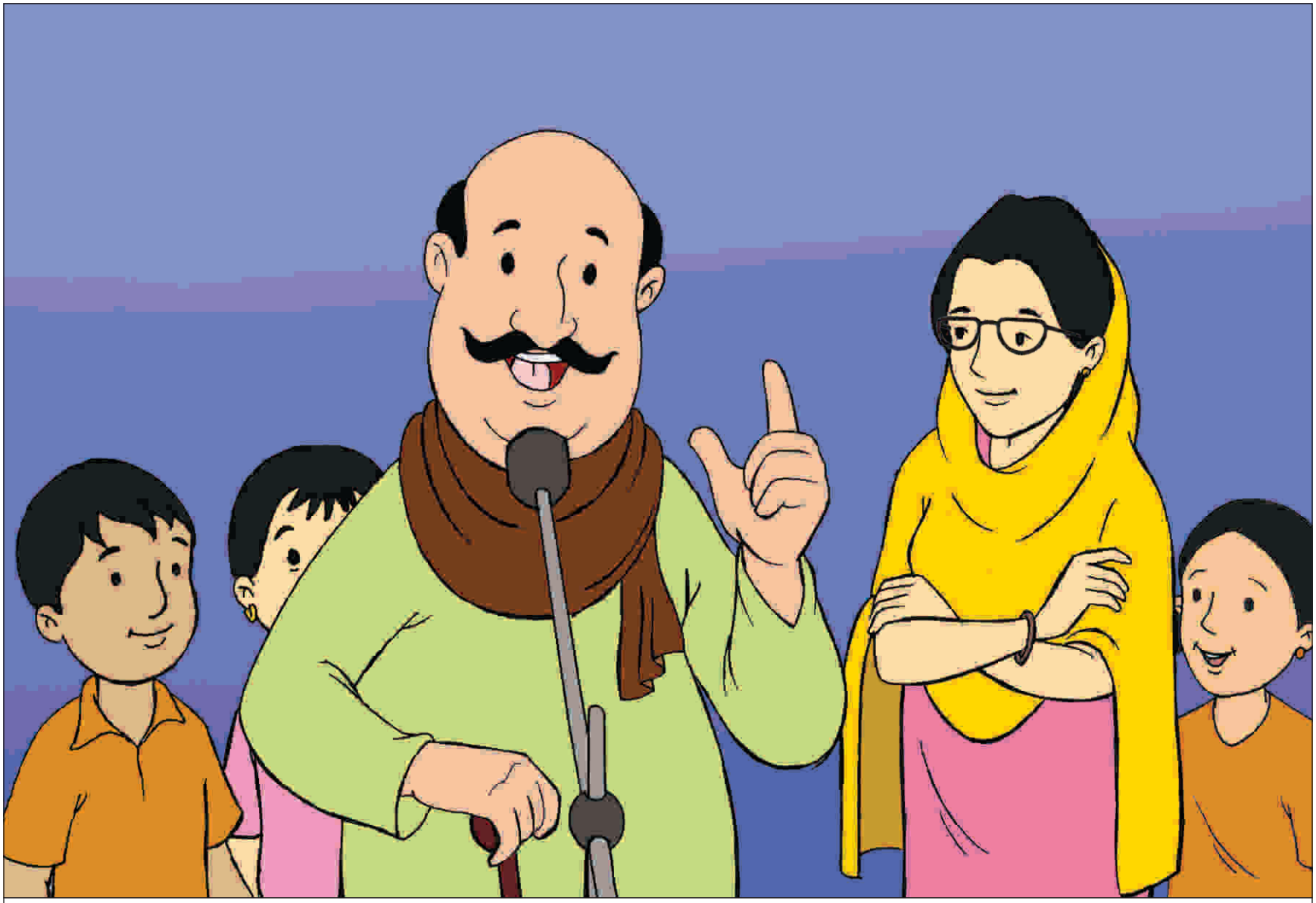

मुखियाजी घोषणा करते हैं – हमारी पंचायत तैयारी शुरू करने जा रही है कि अगर भूकंप आ जाए तो क्या करना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि आप सब इस काम में सहयोग देंगे।

सब गाँव वाले एक साथ कहते हैं – हाँ, हाँ। हम पूरा सहयोग देंगे।

मीना की कहानियां

मीना श्रृंखला 1

- मुर्गियों की गिनती
- दहेज न लेना, न देना
- आम का बँटवारा
- मीना की तीन इच्छाएं
- क्या मीना को स्कूल छोड़ना पड़ेगा?
- छोटी सी दुल्हन
- बेटियों की देखरेख
- मुझे स्कूल अच्छा लगता है
- जीवन रक्षा
- लड़का ही होगा
- धौंसिये से कौन डरता है?
- एक लड़की की कहानी

मीना श्रृंखला 2

- बादल और बत्तख
- रानी के टीके
- अंधेरे में देखना
- अब और कीड़े नहीं
- हाथ की सफाई
- मीना और उसका दोस्त
- हम स्कूल चलें संग
- मीना और क्रिकेट
- हमें किताबें पसन्द हैं
- मीना शहर में
- बदल गया है जीवन
- लड़कियों की वापसी
- हर बच्चा पहलवान

मीना श्रृंखला 3

- मेले में नाटक
- झुको, ढको और पकड़ो

roopayan

unicef